श्रावण मास (30 जुलाई 2026 से 28 अगस्त 2026) नित्य पाठ करें

मार्कण्डेय रचित चन्द्रशेखर स्तोत्र

रत्नासानु शरासनं रजतादि श्रृंग निकेतनम्।
सिञ्जिनीकृत पन्नगेश्वर मच्युतानन सायकम्।
क्षिप्रदग्धपुरत्रयं त्रिदिवालयैरभिवन्दितं
चन्द्रशेखर माश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।१।।

पञ्चपादप पुष्पगन्ध पदाम्बुज द्वयशोभितं
भाललोचन जातपावक दग्ध मन्मथ विग्रहम्।
भस्मदिग्ध कलेबरं भवनाशनं मव्ययं
चन्द्रशेखर माश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।२।।

चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर पाहि माम्।
चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष माम्।

मत्तवारण मुख्यचर्म कृतोत्तरीय मनोहरं
पङ्कजासन पद्मलोचन पूजितांघ्रि सरोरुहम्।
देवसिन्धु तरङ्गसीकर सिक्तशुभ्र जटाधरं
चन्द्रशेखर माश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।३।।

यक्षराजसखं भगाक्षहरं भुजङ्ग विभूषणं
शैलराज सुता परिष्कृत चारुवाम कलेबरम्।
क्ष्वेडनीलगलं परश्वधधारिणं मृगधारिणं
चन्द्रशेखर माश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।४।।

चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर पाहि माम्।
चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष माम्।

कुण्डलीकृत कुण्डलेश्वर कुण्डलं वृषवाहनं
नारदादि मुनीश्वर स्तुतवैभवं भुवनेश्वरम्।
अन्धकान्तकमाश्रितामर पादपं शमनान्तकं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।५।।

भेषजं भव रोगिणामखिलापदाम पहारिणं
दक्ष यज्ञ विनाशनं त्रिगुणात्मकं त्रिविलोचनम्।
भुक्ति मुक्ति फल प्रदं सकलाघ संघ निबर्हणं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।६।।

चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर पाहि माम्।
चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष माम्।

भक्त वत्सल मर्चितं निधिक्षयं हरिदंबरं
सर्व भूतपतिं परात्परमप्रमेयमनुत्तमम्।
सोमवारिद भोहुताशन सोमपानिलखाकृतिं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।७।।

विश्व सृष्टि विधायिनं पुनरेव पालन तत्परं
संहरन्तमपि प्रपञ्चम शेष लोक निवासिनम्।
क्रीडयन्त महर्निशं गणनाथ यूथ समन्वितं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।८।।

चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर पाहि माम्।
चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष माम्।

हिन्दी भावार्थ

कैलाश शिखर पर जिनका निवासगृह है, जिन्होंने मेरु गिरि का धनुष, नागराज वासुकि की प्रत्यञ्चा और भगवान विष्णु को अग्निमय बाण बनाकर तत्काल ही दैत्यों के तीनों पुरों को दग्ध कर डाला था, सम्पूर्ण देवता जिनके चरणों की वन्दना करते हैं, उन भगवान् चन्द्रशेखर की मैं शरण लेता हूं। यमराज मेरा क्या करेगा?।।1।।

मन्दार, पारिजात, संतान, कल्पवृक्ष और हरिचन्दन के पुष्पों से सुगन्धित युगल चरण-कमल जिनकी शोभा बढ़ाते हैं, जिन्होंने अपने ललाटवर्ती नेत्र से प्रकट हुई आग की ज्वाला से कामदेव के शरीर को भस्म कर डाला था, जिनका श्री विग्रह सदा भस्म से विभूषित रहता है, जो भव-सबकी उत्पत्ति के कारण होते हुए भी भव - संसार के नाशक हैं तथा जिनका कभी विनाश नहीं होता, उन भगवान चन्द्रशेखर की मैं शरण लेता हूं। यमराज मेरा क्या करेगा?।।2।।

जो मतवाले गजराज के मुख चर्म की चादर ओढ़े परम मनोहर जान पड़ते हैं, ब्रह्मा और विष्णु जिनके चरण-कमलों

की पूजा करते हैं तथा जो देवताओं और सिद्धों की नदी गंगा की तरंगों से भीगी हुईं शीतल जटा धारण करते हैं, उन भगवान् चन्द्रशेखर की मैं शरण लेता हूं। यमराज मेरा क्या करेगा?।।3।।

जो यक्षराज कुबेर के सखा, भग देवता की आंख फोड़ने वाले और सर्पों के आभूषण धारण करने वाले हैं, जिनके श्रीविग्रह के सुन्दर वामभाग को गिरिराज किशोरी उमा ने सुशोभित कर रखा है, कालकूट विष पीने के कारण जिनका कण्ठभाग नीले रंग का दिखायी देता है, जो एक हाथ में फरसा और दूसरे में मृगमुद्रा धारण किये रहते हैं, उन भगवान् चन्द्रशेखर की मैं शरण लेता हूं। यमराज मेरा क्या करेगा?।।4।।

कुण्डली मारे हुए सर्पराज जिनके कानों में कुण्डल का काम देते हैं, जो वृषभ पर सवारी करते हैं, नारद आदि मुनीश्वर जिनके वैभव की स्तुति करते हैं, जो समस्त भुवनों के स्वामी, अन्धकासुर का नाश करने वाले, आश्रित जनों के लिये कल्पवृक्ष के समान और यमराज को भी शान्त करने वाले हैं, उन भगवान् चन्द्रशेखर की मैं शरण लेता हूं। यमराज मेरा क्या करेगा?।।5।।

जो जन्म-मरण के रोग से ग्रस्त पुरुषों के लिये औषध रूप हैं, समस्त आपत्तियों का निवारण और दक्ष-यज्ञ का विनाश करने वाले हैं, सत्त्व आदि तीनों गुण जिनके स्वरूप हैं, जो तीन नेत्र धारण करके, भोग और मोक्षरूपी फल देते तथा सम्पूर्ण पापराशि का संहार करते हैं, उन भगवान् चन्द्रशेखर की मैं शरण लेता हूं। यमराज मेरा क्या करेगा?116।।

जो भक्तों पर दया करने वाले हैं, अपनी पूजा करने वाले मनुष्यों के लिये अक्षय निधि होते हुए भी जो स्वयं दिगम्बर रहते हैं, जो सब भूतों के स्वामी, परात्पर, अप्रमेय और उपमा रहित हैं, पृथ्वी, जल, आकाश, अग्नि और चन्द्रमा के द्वारा जिनका श्रीविग्रह सुरक्षित है, उन भगवान् चन्द्रशेखर की मैं शरण लेता हूं। यमराज मेरा क्या करेगा?117।।

जो ब्रह्मा रूप में सृष्टि करते हैं, फिर विष्णु रूप में पालन और अन्त में सारे प्रपञ्च का संहार करते हैं, सम्पूर्ण लोकों में जिनका निवास है तथा जो गणेश जी के पार्षदों से घिरकर दिन-रात भांति-भांति के खेल किया करते हैं, उन चन्द्रशेखर की शरण में यमराज मेरा क्या करेगा?।।8।।

श्रीशिव पञ्चाक्षर स्तोत्रम्

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय
भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय
तस्मै नकाराय नमः शिवाय।।१।।

◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇

मन्दाकिनी सलिल चन्दन चर्चिताय
नन्दीश्वर प्रमथनाथ महेश्वराय।
मन्दार पुष्प बहुपुष्प सुपूजिताय
तस्मै मकाराय नमः शिवाय।।२।।

◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇

शिवाय गौरी वदनाब्ज वृन्द
सूर्याय दक्षाध्वर नाशकाय।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय
तस्मै शिकाराय नमः शिवाय।।३।।

◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇

वसिष्ठ कुम्भो द्भवगौतमार्य
मुनीन्द्रदेवैरर्चिताय।
चन्द्रार्केश्वराय नागेश्वराय
तस्मै वकाराय नमः शिवाय।।४।।

◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇

यज्ञस्वरूपाय जटाधराय
पिनाकहस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय
तस्मै यकाराय नमः शिवाय।।५।।

◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇

पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते।।